संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श

संपादक
राधावल्लभ त्रिपाठी
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
नौनिहाल गौतम

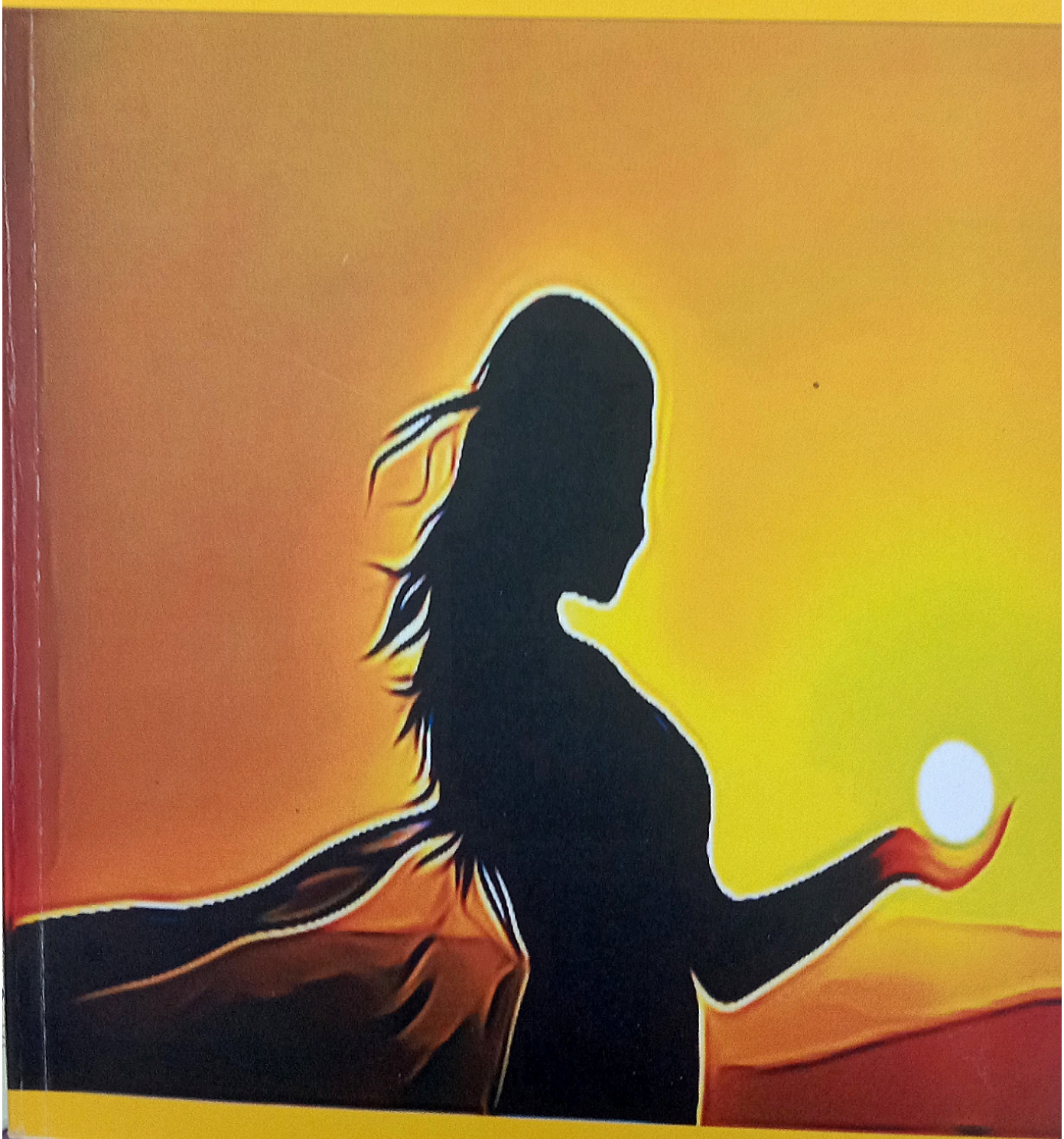

अनुक्रम

संपादकीय 5

1. संस्कृत वाङ्मय में स्त्री : वाद, प्रतिवाद तथा शेष प्रश्न 9
राधावल्लभ त्रिपाठी

2. स्त्री-विमर्श की वैदिक पृष्ठभूमि 40
शशिप्रभा कुमार

3. वैदिक साहित्य में स्त्री 51
नौनिहाल गौतम

4. वैदिक एवं वेदोत्तर संस्कृत साहित्य में स्त्री का आर्थिक पक्ष 63
नागेश दुबे

5. वैदिकसाहित्ये नारीवाचकशब्दानां वैशिष्ट्यम् 72
किरण आर्या

6. प्रमुख स्मृतियों में स्त्री-अधिकार 80
अभिराज राजेंद्र मिश्र

7. धर्मशास्त्रों में नारी : सामाजिक मान 96
उमारानी त्रिपाठी

8. धर्मशास्त्रों में स्त्री : शिक्षा, अधिकार और कर्त्तव्य 104
रामहेत गौतम

9. रामकथा और नारी विमर्श 113
रहस बिहारी द्विवेदी

10. वाल्मीकि रामायण में स्त्री 130
धर्मेंद्र कुमार सिंहदेव

11. कालिदास के नाटकों में स्त्री
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 139

12. महाकवि बाणभट्ट का स्त्री-चिंतन
राघवेंद्र शर्मा 155

13. हर्षकालीन संस्कृत साहित्य में स्त्री
सुरेंद्र कुमार यादव 163

14. उत्तररामचरितम् में स्त्री
गोपाल लाल मीणा 177

15. समकालीन संस्कृत काव्य में स्त्री
सरोज कौशल 193

16. आधुनिक संस्कृत साहित्य में स्त्री
अर्चना जोशी 203

17. समकालीन संस्कृत साहित्य में स्त्री
मंजुलता शर्मा 217

18. संस्कृत काव्य परंपरा में नारी
ऋषभ भारद्वाज 229

19. जानकीजीवनम् महाकाव्य में स्त्री
संजय कुमार 240

20. आचार्यराधावल्लभीयसंस्कृतसाहित्ये नारीचेतना
पूर्णचंद्र उपाध्याय 249

लेखकों के पते 255

जानकीजीवनम् महाकाव्य में स्त्री

संजय कुमार

आधुनिक संस्कृत महाकाव्य परंपरा में आचार्य अभिराजराजेंद्रमिश्र द्वारा प्रणीत 'जानकीजीवनम्' महाकाव्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह महाकाव्य जगत् वंदनीया जानकी के जीवन-चरित के ब्याज से स्त्री-विमर्श का एक सारगर्भित दस्तावेज प्रस्तुत करता है।

'जानकीजीवनम्' महाकाव्य स्त्री-संरक्षण का महाकाव्य है। यह महाकाव्य जानकी की सभी अवस्थाओं का महात्म्य भी प्रस्तुत करता है। जानकी के जन्म के पहले भयंकर अकाल पड़ा था, लेकिन जन्म लेते ही मेघवर्षा की बाढ़ से पृथ्वी जलमग्न हो उठी। चारों ओर प्रसन्नता फैल जाती है[1] भविष्यवाणी के द्वारा कन्या जन्म का महात्म्य प्रस्तुत किया गया है -

अवेहि राजन्ननपायदीप्तिं श्रियन्नु साक्षाद्गृहमागतान्ते।
स्वकर्मजं स्यात्फलमात्मरूपं ह्यचिन्तितं किंतु विभातिभाग्यम्।।
तवैव नाम्ना प्रथिताभिधानं गमिष्यतीयं भुवनेषु कन्या।
विदेहनन्दिन्यथ जानकीति श्रयेत संज्ञामिह मैथिलीति।।[2]

अर्थात् हे राजन! अक्षुण्ण दीप्तिवाली इस कन्या को अपने घर आई हुई साक्षात् लक्ष्मी समझो। अपने कर्मों के परिणामस्वरूप प्राप्त होने वाला फल भले ही आत्मानुरूप हो, किंतु भाग्य का फल तो अतार्किक रूप से ही वैभव प्रदान करता है। यह कन्या तुम्हारे नाम के आधार पर संसार में शुभ संज्ञा को प्राप्त करेगी। इसका नाम विदेह-नंदिनी जानकी अथवा मैथिली होगा। यहाँ कन्या के प्रति कवि ने दैवी भाव का उल्लेख किया है और यह भी बताया है कि कन्याएँ सदैव पितृकुल को गौरवान्वित करती हैं। वह सीता निश्चित रूप से महाराजा जनक की कीर्ति को